मंगलवार सत्संग की

ड्यूटी - योग्यता - युक्ति

(सेवा - भाव)

(भाग - 1)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

मंगलवार सत्संग की

ड्यूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा-भाव)

(भाग-1)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)
'वसुन्धरा'
निकट गाँव भोपानी,
भोपानी - लालपुर रोड, फरीदाबाद

प्राक्कथन

युग-युग में कुदरती ग्रन्थ आते हैं, जिनमें कुदरत के सत्य का वर्णन होता है और उस वर्णित सत्य को ग्रहण करना मनुष्य जीवन-काल में अति आवश्यक होता है। यहां विडम्बना यह है कि इन ग्रन्थों में वर्णित सत्य को कोई विरला ही समझ व धारण कर पाता है और फिर वह असत्यता में विचरते हुए सजनों को सत्य के संग की प्रवृत्ति में ढालने का सत्संग द्वारा यत्न करता है, ताकि अधिकाधिक सजन सत्वगुणी अर्थात् उत्तम प्रकृति वाले बनें। सत्संग में फिर अध्यात्म-सम्बन्धी चर्चा होती है। इस प्रकार समाज में ऐसी धार्मिक सभा का गठन होता है और उस सभा में आने वाला हर सजन सत्संगी अर्थात् अच्छी संगति में रहने वाला कहलाता है और वह सब से मेल-जोल रखने वाला माना जाता है।

सत्संग एक प्रकार से सजनों का संग साथ है और सत्संग द्वारा ही आत्मतत्व अर्थात् जीवन शक्ति का सत्य रूप से ज्ञान होता है। जो सजन प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कामों की ओर प्रवृत्त करता है, उसे धारण कर लेता है तो वह सत्वगुण की प्रधानता के कारण सत्यवान, दृढ़ संकल्प वाला, सदाचारी, धीर, धर्मशास्त्र का ज्ञाता, धर्म करने वाला, धार्मिक शिक्षा देने वाला, पुण्य-कार्य करने वाला, मर्यादा-पुरुषोत्तम कहलाता है। यही श्रेष्ठ गुण-धारी फिर धर्म अधिकारी न्यायाधीश की भांति सत्संग में आने वाले हर सजन की परख कर उसमें निहित सत्य का सरलता व स्पष्टता से बोध कराते हुए सत्संगियों के मन में उस सत्य ज्ञान की उत्तमता जता उसके प्रति उन्हें उमंगित व उत्साहित करता है।

उपरिलिखित उद्देश्य-पूर्ति के लिए सत्संग व्यवस्था का प्रबन्ध सुचारु रूप से बनाए रखने के लिए एक ऐसे विधान की आवश्यकता

होती है जो सत्संग के सभी सदस्यों को भली प्रकार से कार्य अथवा आचरण करने के लिए बाध्य करे ताकि हर सजन आदेश पालन की योग्यता से भरपूर हो और उस सजन को मान-अपमान, वड-छोट, अमीरी-गरीबी का भेद-भाव न छू पाए या प्रभावित न कर पाए क्योंकि केवल इसी प्रकार ही सत्संग में समभाव-समदृष्टि और एकता का वातावरण पनप सकता है और बना रह सकता है। इसीलिए इस पुस्तक की रचना आवश्यक समझी गई ताकि हर सभा संचालक का प्रयत्न फलीभूत हो और कलयुगी-जीवों का उद्धार हो सके। उनके हृदय में भी प्रकाश-किरण ज्योति-पुंज हो उठे और वे इसी जीवन में समवृत्ति एवं समदृष्टि बन इस मनुष्य चोले का भरपूर आनन्द और सुख मान सकें।

इस सन्दर्भ में सेवा-भाव का महत्व देखते हुए सत्संग की सत्संगियों द्वारा हर प्रकार की सेवा का वर्णन कर उनको उस सेवा के लिए योग्यता और युक्ति के प्रति जागरूक बनाए रखने के लिए प्रयास किया गया है। इसीलिए अब हर सजन का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस पुस्तक में लिखित विधान का गंभीरता और निर्भयता से पालन करता हुआ, सत्संग में आने वाले हर सत्संगी को आत्मिक उन्नति प्रदान करने के लिए "मैं" को त्याग कर, सहनशील बन निष्काम-भाव से अपनी योग्यता अनुसार सेवा करे ताकि हर मन, परिवार और कुल संसार में शांति का साम्राज्य स्थापित हो। **यही सतयुग है, क्योंकि :**

सतवस्तु में विचार ते सतजबान होसी,
एक दृष्टि एकता महान होसी,
न जप, न तप, न भजन, न बन्दगी,
एक अवस्था ओ जगत जहान होसी।

जिससे हर सजन अपनी असलियत की पहचान कर, जेहड़ा मन-मन्दिर प्रकाश है ओही असलियत ज्योति-स्वरूप मेरा अपना आप, पर खड़ा हो एक निगाह एक दृष्टि और एक दर्शन पर परिपक्वता से ठहर जड़-चेतन में, उसी एक दर्शन का आभास कर सजन-भाव में गुढ़ सकेगा। **याद रखो:-**

असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म
जैंदा रूप रेखा नहीं रंग।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश
ईश्वर है जे अजपा जाप।
विचार ईश्वर आप नूं मान
विचार ईश्वर आप नूं ही मान।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	ड्यूटी का विषय	पृष्ठांक
1.	ड्यूटी लगाना	1
2.	बिछाई	2
3.	पुस्तक उठाना और चंवर झुलाना	3
4.	तिलक	4-5
5.	विधि करना व कीर्तन बोलना	6-7
6.	साज (हारमोनियम, ढोलकी व रोड़ा) बजाना	8
7.	आरती	9
8.	सभा में मौनव्रत देखना, हाजरी लेना, सजनों को अनुशासित ढंग से रखना, चोले पाना व रूमाले आदि देना	10-11
9.	अमृत बनाना	12
10.	रामायण व शास्त्र पढ़ना	13
11.	भोग लगाना	14
12.	अमृत व प्रशाद बाँटना	15
13.	खजाने का रख-रखाव	16
14.	मालिक के प्यारों को प्रशाद बाँटना	17

अनुक्रमणिका

क्रमांक	ड्यूटी का विषय	पृष्ठांक
15.	जोड़ों पर	18
16.	पानी पिलाना	19
17.	बिजली माईक प्रबन्ध	20
18.	सवारी को वापिस ले जाना व बिछाई समेटना	21

सत्संग आरम्भ होने का समय:

दोपहर दो बजे

सत्संग समाप्ति का समय:

सायं पाँच बजे

मंगलवार सत्संग की सभी नीतियां स्त्री सजनों ने 'सतवस्तु के सत्संग की विधियाँ' वाली पुस्तक में वर्णित विधि के अनुसार ही करनी हैं।

ड्यूटी लगाना 1

योग्यता

(1) पाँच प्यारों में से एक (2) निष्ठावान यानि धर्म के प्रति सत्यनिष्ठ हो (3) नीतिवान (4) उदर पात्र बड़ा अर्जुन वाला होवे (5) दूरदर्शी यानि सजग, सचेत और जागरूक होना (6) स्वतन्त्र बुद्धि से निर्णायक क्षमता धारण किए हुए रहना (7) परोपकारी प्रवृत्ति होना (8) आद् से कंचन हो (9) नामी जो गाना पहने हुए हो (10) शांतिप्रिय-'हौं' 'मैं' से रहित हो (11) गृहस्थ आश्रम ठीक होना (12) मधुरभाषी (13) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (14) इच्छुक (15) प्रेमी व श्रद्धावान (16) सादगी प्रिय।

युक्ति

किसी भी सजन को ड्यूटी देने से पहले उसको उस सेवा के प्रति स्पष्ट व सजग करना। युक्ति को कंठस्थ कराना और फिर सेवा धर्म का पालन कराते हुए उस पर नजर रखना कि वह कार्य सुचारु रूप से कर रहा है या नहीं। त्रुटि होने पर सही समय पर उसका उचित मार्गदर्शन करना। ड्यूटी लगाने वाले सजन ने स्त्री सजनों की मासिक धर्म की तारीख पूछ कर ही अगले हफ्ते बिछाई करने वाले सजन की ड्यूटी निर्धारित करनी है। उस आने वाले मंगलवार के आस-पास यदि किसी स्त्री सजन के मासिक धर्म की तारीख हो तो उस सजन की ड्यूटी नहीं लगानी। ड्यूटी लेने वाले सजन को इस तरह से सचेत और जागरूक कर देना है।

बिछाई 2

योग्यता

(1) मासिक धर्म से निवृत्त होना (2) ड्यूटी के प्रति ज्ञान होना (3) शुद्ध आचरण वाला होना (4) नामी होना (5) प्रेमी व श्रद्धावान (6) इच्छुक (7) सादगी प्रिय।

युक्ति

पांच प्यारों में से एक सजन को चाहिए कि वह बिछाई वाले दो सजनों की ड्यूटी एक सप्ताह पहले से ही निर्धारित कर दे जिससे वह बिछाई की तैयारी में जुट जाए। ड्यूटी देने वाले सजन को सचेत कर दें कि उसने सात दिन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना है, और किसी शोक वाली जगह पर नहीं जाना। रोने झुरने आदि के स्वभाव से बचकर रहना है।

नाम अक्षर जप जप कर वह सजन अपने अन्दर इतना प्रेम बना लें कि बिछाई के समय उनकी अफुर अवस्था बनी रहे इसके लिए गृहस्थ में शांत वातावरण होना आवश्यक है। बिछाई की ड्यूटी करने के लिए घर से आते समय हृदय में नाम अक्षर चलाते हुए आना है किसी से कोई बात नहीं करनी। इसी प्रकार सिर ढक कर शांत अवस्था में रहते हुए मौनव्रत से बिछाई करनी है। बिछाई आरम्भ करने से पहले प्रार्थना व चरण-शरण मन में कर लेनी है और फिर नाम अक्षर चलाने की निरन्तरता बनाए रखनी है। याद रहे ख्याल ने भी मौनव्रत धारे रखना है। बिछाई वाले सजन ने ही अमृत के लिए दूध, संगत के लिए मिश्री, इलायची, प्रशाद के लिए बर्फी हार एवं गर्मियों में सत्संग के लिए ठंडा पानी पिलाने हेतु बर्फ का इंतजाम अपने पैसों से करना है। यह भी ध्यान रखना है कि बिछाई "मैं" भाव से न हो और साथ ही साथ कहीं भी गंदगी या बिछी दरी इत्यादि पर सिलवट न हो। बिछाई की ड्यूटी करने वाले सजन के प्रेम पर ही सत्संग का प्रेम और प्रकाश निर्भर होता है। इसीलिए बिछाई सेवा भी एक किस्म का परोपकार है। बिछाई करने वाले सजन को चाहिए कि लाया हुआ अमृत प्रशाद सत्संग के आरम्भ होने से पहले ही स्टेज के नीचे पड़ी चौकी के ऊपर रूमाले से ढक कर ग्रन्थ के चरणों में रख देवे।

पुस्तक उठाना और चंवर झुलाना 3

योग्यता

(1) बिछाई करने वाले सजन (2) मासिक धर्म से निवृत्त होना (3) ड्यूटी के प्रति ज्ञान होना (4) नामी होना (5) शुद्ध आचरण वाला होना (6) प्रेमी व श्रद्धावान (7) इच्छुक (8) स्वस्थता (दोनो शारीरिक व मानसिक (9) पूर्णतया-जागरूक व सचेत (10) सादगी प्रिय यानि सादा पहरेवा होना।

युक्ति

सिर ढक कर, बिछाई वाले सजनों ने प्रार्थना, चरण-शरण, पांच जयकारे लगाने के पश्चात् एक ने शास्त्र, दूसरे ने रामायण और तीसरे सजन ने कीर्तन वाली पुस्तकों को सीस पर धारण कर हाथ में चंवर ले, शास्त्र पर चंवर झुलाते हुए धीरे-धीरे विश्रामपूर्वक स्टेज की ओर यह कीर्तन बोलते हुए आगे च्ढ़ना है।

'चलो चलिए सजन महाबीर जी दे पास दासियाँ रल चलिए...'

आवश्यकता पड़ने पर पाँच प्यारों में से एक सजन इन ड्यूटी वाले सजनों की सहायता कर सकता है। स्टेज के पास पहुंच फिर से पांच जयकारे लगाने के पश्चात् शास्त्र और रामायण को सिंहासन पर विराजमान करना है। स्टेज पर बैठने वाले सजन के दाहिनी ओर महाबीर जी के सिहांसन के पास लगे सिंहासन पर रामायण विराजमान करनी है तथा बांईं ओर लगे सिंहासन पर शास्त्र विराजमान करना है। साथ-साथ 'जय सीता राम बोल जय सीता राम बोल' यह बोलते रहना है। फिर स्टेज पर बैठ शास्त्र का प्रकाश करना है और उस पर नीतिनुसार चंवर झुलाते रहना है। ध्यान रहे मन में नाम-अक्षर चलता रहे और प्रेम उछाले मारे। चेहरे पर मुस्कुराहट हो। चंवर झुलाने वाले सजन ने विधि संगत के साथ बोलते रहनी है ताकि उसे नींद न आए और फुरना न सताए। इस सजन ने आंखें बंद करके सजग और सचेत बैठना है और यदि नींद आने लगे तो आंखें खोल लेनी हैं।

तिलक 4

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था (2) दृष्टि कंचन व ठहरी हुई हो (3) समवृत्ति यानि सजन भाव, समभाव पर ठहरी हुई हो व सद्‌भाव से प्रेरित हो (4) नामी हो (5) गाना पहना हुआ हो (6) प्रेमी व श्रद्धावान (7) इच्छुक (8) सादगी प्रिय (9) स्वच्छता (अन्दरूनी जिव्हा और ख्याल की, संकल्प की व बैहरूनी शरीर की दोनों हों) (10) स्वस्थ (11) विचारवान।

युक्ति

तिलक केसर या गुलानारी रंग के सिन्दूर से प्रार्थना चरण शरण करने के उपरान्त नाम अक्षर चलाते हुए चांदी की कटोरी में बनाना चाहिए।

तिलक बनाने की विधि इस प्रकार है :

तिलक केवल सिन्दूर में थोड़ा सा पानी मिला कर बनाना है। तिलक सजनों के मस्तक पर शास्त्र के प्रकाश व प्रार्थना के उपरान्त जब

"सब गौरी नन्द गणेश - प्रथम प्रणाम करो"

बुलना आरम्भ हो तो चांदी की तीली से लगाना है। तिलक लगाने वाले ने सबसे पहले तिलक अनुभव द्वारा सजन श्री शहनशाह महाबीर जी को और फिर अपने इष्ट को अन्दर लगाना है। तिलक पहले शास्त्र के आगे बैठे सजन को लगाना है फिर सारी संगत को। तिलक लगाने वाले सजन की एक निगाह एक दृष्टि हो और वह तिलक लगाते समय सब सजनों में वह साजन सज रहा है उस दर्शन को सामने रख तिलक लगाए।

पहले तिलक लगाने वाला सजन तिलक लगाना आरम्भ कर जितनी संगत बैठी हुई हो उनके मस्तक पर जाकर तिलक लगाएगा फिर स्टेज के पास बैठ जाएगा और बाद में आने वाले सजनों के मस्तक पर वहीं बैठे-बैठे तिलक

लगाएगा। तिलक लगाने की ड्यूटी के दौरान मन में नाम-अक्षर चलाते रहना है।

तिलक लगाने वाले सजन ने संगत को थोड़ी-थोड़ी मिश्री इलायची भी बांटनी है।

विधि करना व कीर्तन बोलना 5

योग्यता

(1) नामी प्रेमी व श्रद्धावान हो (2) शब्द उच्चारण स्पष्ट व शुद्ध हो (3) सुरों का ठीक ज्ञान हो (4) आवाज सुरीली व मीठी हो (5) शब्दों के साथ जुड़ कर बोल सकता हो (6) उसे विधि पूरी जबानी कंठस्थ हो (7) हौं "मैं" से रहित (8) धैर्यवान (9) शांतिप्रिय (10) सादगी प्रिय (11) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी जिव्हा की ख्याल और संकल्प की व दृष्टि की और बैहरूनी शरीर की)।

युक्ति

विधि व कीर्तन बोलने वाले सजन का सिर ढका हो। विधि व कीर्तन बोलने वाले सजन के चेहरे पर कीर्तन बोलते समय मुस्कुराहट होनी चाहिए। संगत को भी कहना है कि पीछे से मुस्कुराहट से ही उत्तर देंगे। इस तरह सारी सभा ने प्रसन्नता का, मुस्कुराहट का स्वभाव अपनाए रखना है। विधि या कीर्तन बोलते समय बोले जाने वाले शब्दों के भावों को समझते हुए जो उसमें वर्णित है, उसे अपने अन्दर अनुभव करते हुए बोलना है। बोलते समय ऐसा प्रतीत हो जैसे बोलने वाला सजन वैसा समक्ष देख रहा है और संगत के सजनों को बता रहा है। कुदरती शास्त्र के एक एक शब्द को बोलते समय उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट हो ताकि सुनने वाले को उन शब्दों द्वारा बताए जाने वाले ज्ञान की सूक्ष्मता से समझ आए। बोलते समय सभा को निरन्तर जागरूक व उत्साहित रखना है ताकि उन के अन्दर प्रेम उमड़े उछाले मारे और जिस प्राप्ति के लिए वह सत्संग में आते हैं उनको मिल जाए। कीर्तन बोलते समय कोई भी शब्द अपनी तरफ से नहीं जोड़ना। लय की गति सत्संग के प्रेम-भाव को समझते हुए ऊपर नीचे ले जानी है। कीर्तन आरम्भ होने से पहले ही जो जो उस दिन बोलना है, पुस्तक में निशानी रख लेनी है ताकि कीर्तन एक पल के लिए भी न रुके। यह निरन्तरता बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है क्योंकि कीर्तन रुकने का अर्थ है सजनों की वृत्ति रुक जाना, जो हानिकारक साबित होती है। कीर्तन तन्मयता से बोलना है। स्टेज पर बैठकर कोई आपसी बातचीत व इशारे नहीं करने। विधि करने वाले को चाहिए कि वह पहले से ही साज अर्थात् ढोलक बाजा आदि

बजाने वालों के साथ बोलने का अभ्यास कर ले ताकि साज का ताल मेल टूटने से सजनों के प्रेम की तार न टूटे। याद रहे कीर्तन केवल शास्त्र में से ही बोलने हैं और यह भी ध्यान रहे कि सत्संग के दौरान संगत विश्राम में रहे। कीर्तन शास्त्र में से क्रमशः आगे को बढ़ते हुए अर्थात् युक्तिसंगत वृत्ति को ऊंचा उठाने के लिए ठीक निर्धारित लय में बोलने हैं ताकि सत्संगियों में प्रेम और उत्साह बना रहे।

नोटः- कीर्तन बोलने वाला सजन ध्यान में रखे कि हर साल सावन की मीटिंग के बाद वाले मंगलवार से कलुकाल के कीर्तन बोलने शुरु करने हैं। यह कीर्तन क्रम से (तरतीबवार) बोलने हैं। आगे पीछे नहीं बोलने। यह कीर्तन इस कीर्तन से शुरु होते हैंः-

'हे स्वामिन कलयुग नूं आप हटा, नारद जी रहे ने बता'।

ध्यान रहे दो या तीन कीर्तन जो इतवार को बोले जावें वही कीर्तन मंगलवार को बोले जावें।

साज (हारमोनियम, ढोलकी व रोड़ा) बजाना

6

योग्यता

(1) साज बजाने में अनुभवी हों (2) नामी प्रेमी व श्रद्धावान हों (3) सुरों का ठीक ज्ञान हो (4) शब्दों के साथ जुड़ कर साज बजा सकता हो (5) शुद्ध स्पष्ट शब्द उच्चारण हो (6) "हौं" "मैं" से रहित (7) स्वस्थ हो (8) धैर्यवान (9) शांतिप्रिय (10) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी जिव्हा की, ख्याल की संकल्प की व दृष्टि की और बैहरूनी शरीर की) (11) सादगी प्रिय।

युक्ति

बाजा बजाने वाले सजन ने आवाज और सुर का तालमेल एकरस रखना है ताकि एक-एक शब्द संगत को स्पष्टता से सुनाई दे। ढोलक की ताल का तालमेल, स्टेज से उच्चारित हो रहे शब्दों व लय से मेल खाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए ढोलक वाले सजन का ध्यान स्थिर बना रहे और स्टेज से उच्चारित लय उसके मस्तिष्क में गूंजती हुई ढोलक पर ताल दे। इस क्रिया को सक्रियता से निभाने के लिए ढोलक वाला सजन आंखे बंद कर के निभाने में सक्षम हो तो अच्छा है, वरना आंखें खोल कर स्टेज पर बोलने वाले सजन की तरफ देख सकता है। स्टेज से बुलने वाले हर शब्द का उत्तर उसी लय में देने से इस क्रिया में और भी गति बन सकती है। यहां यह याद रहे शब्द उच्चारण हर सजन को ठीक प्रकार से समझ आए। इसके लिए साज नर्म रखना है और रोड़ा न ही बजाए तो अच्छा है।

योग्यता

(1) बिछाई करने वाला दूसरा सजन (2) मासिक धर्म से निवृत्त होना (3) शुद्ध उच्चारण हो और दोनो आरतियां सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की, श्री रघुवंशमणि जी की जबानी आती हो (4) शुद्ध आचरण वाला होना (5) ड्यूटी के प्रति ज्ञान होना (6) नामी होना (7) इच्छुक (8) प्रेमी (9) श्रद्धावान (10) सादगी प्रिय।

युक्ति

कांसे की थाली में चांदी की कटोरी रख या आटे की कटोरी बना देसी घी डालकर रूई की वट बनाकर आरती करनी है। साथ ही धूप भी जलानी है जिसे थोड़ा जग जाने के पश्चात् आरती आरम्भ होने से पहले धूप की लौ को शांत कर लेना है। आरती करने से पहले आरती की थाली में थोड़े फूल भी रख लेने है तथा सजन 'श्री शहनशाह हनुमान जी' की आरती करते समय जब यह पंक्ति बुले :-

'दासी सीस निवावे बलि ते फूल बरसावे.....।'

तो यह फूल शास्त्र पर बरसाने हैं। आरती की थाली दोनों हाथों से पकड़ बड़े प्रेम पूर्वक धीरे-धीरे बाएं से दाएं घुमाते हुए स्पष्टता से बोलते हुए करनी है। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की आरती उनका ध्यान लगाकर और 'रघुवंशमणि जी' की आरती उनका ध्यान लगा कर करनी है। याद रहे कि बैहरूनी वृत्ति में आरती उपरिलिखित ढंग से हो रही हो पर अन्दरूनी वृत्ति में आरती ख्याल अपने इष्ट के सामने कर रहा हो।

सभा में मौनव्रत देखना, हाजरी लेना सजनों को अनुशासित ढंग से रखना चोले पाना व रूमाले आदि देना

8

योग्यता

(1) पाँच प्यारों में से एक (2) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी संकल्प, ख्याल, दृष्टि और जिव्हा की व बैहरूनी-शारीरिक तथा रैहणी-बैहणी की) (3) ठहराव हो (4) कर्तव्यपरायण यानि अनथक हो (5) शांतिप्रिय (6) धैर्यवान (7) मुंह मुलाजा न रखने वाला (8) समवृत्ति यानि सजनता व समभाव में ठहरे हुए तथा सद्भावना से प्रेरित (9) निडर और साहसी (10) सचेत और जागरूक (11) नम्र, मधुरभाषी (12) निष्पक्ष।

युक्ति

यह कार्य उसने आंखें खोल कर, सतर्कता से चारों तरफ दृष्टि रख के करना है। ध्यान रखना है कि हर सजन पंक्तिबद्ध मौनव्रत में बैठे। यहां मौनव्रत का अर्थ है कि केवल वही बोलना है जो स्टेज से कीर्तन आदि बोला जाए। अन्य कोई बातचीत नहीं करनी। कोई लाचारी की बात हो तो सजन इतने धीरे से करें कि तीसरा सजन न सुन पाये। ध्यान रखें कि सज़न हिले जुले और ठैं-ठैं नहीं करे। मौनव्रत धारे रहें चूं-चां न करें।

कहीं शोर या किसी बच्चे आदि का रोना हो तो उन्हें हाथ जोड़ कर शांत अवस्था में ले आना है और बच्चे वाली को थोड़ी देर के लिए उठकर बाहर जाने को कह देना है। इसी सजन ने ही यह ध्यान रखना है कि हर सजन कीर्तन का उत्तर प्रेम से दें, कोई सोए नहीं। कीर्तन की समाप्ति के समय जिस सजन ने रूमाला चढ़ाना हो वह रूमाला इसी सजन से ले और यही सजन उन्हें पंक्तिबद्ध कर आगे भेजेगा। भीड़ व धक्का न हो। हर आने जाने वाले पर नजर रखनी है जिससे कोई मान-हानि न हो। सत्संग पर आने वाले हर नामी सजन की हाज़री भी इसी सजन ने रजिस्टर में लगानी है। हाज़री जिस वक्त 'साडा है सजन राम राम है कुल जहान' बुले तो ही लगानी है। जो देर

से आएं उन सजनों को पीछे ही बिठाना है। इस बात का ध्यान रखना है कि सब सजन आंखें बंद कर के बैठें।

रूमाले के पैसे इस सजन ने सजनों से हैसियत अनुसार लेने हैं।

अमृत बनाना 9

योग्यता

(1) नामी हो (2) गाना पहना हुआ हो (3) आद् से कंचन (4) मासिक धर्म से निवृत (5) सजन को हनुमान चालीसा स्पष्टता से याद हो और उसे यह अभ्यास हो कि जब रामायण पढ़ी जा रही हो तो वह साथ साथ चालीसा मन में पढ़ सके (6) सजन उच्चवृत्ति वाला हो (7) प्रेमी (8) श्रद्धावान (9) स्वच्छता (दोनो शारीरिक व मानसिक) (10) सादगी प्रिय।

युक्ति

जैसे ही स्टेज पर रामायण का पढ़ना आरम्भ हो वैसे ही अमृत बनाने वाले को चाहिए कि वह अमृत बनाने की विधि आरम्भ कर दे। अमृत बनाते समय सात बार हनुमान चालीसा मन में करने के साथ साथ सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के अनुभव से चरण धोने हैं और यह आभास करना है कि वह धारा नीचे पड़े हुए पात्र में जा रही है जिसमें पहले से दूध पड़ा होता है। यहां यह ध्यान रखना है कि रामायण व ग्रन्थ पढ़ने की आवाज भी अमृत बनाते समय हमारे ख्याल को किंचित-मात्र फुरने में न घेरे। अमृत बनाने वाले सजन ने सात चालीसे पढ़ने के पश्चात् अपने स्थान पर तब तक उसी अवस्था में बैठे रहना है जब तक बाहर चालीसा मन में न पढ़ा जाए और जब तक भोग लगाने वाला सजन जयकारा न बोले।

रामायण व शास्त्र पढ़ना 10

योग्यता

(1) नामी, प्रेमी व श्रद्धावान (2) मासिक धर्म से निवृत्त होना (3) धैर्यवान व शांतिप्रिय (4) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी जिव्हा की ख्याल की दृष्टि की और बैहरूनी शरीर की) (5) "हौं" "मैं" से रहित (6) गृहस्थ आश्रम में ठीक विचरता हो (7) सादगी प्रिय।

युक्ति

जिस सजन को रामायण व शास्त्र ठीक लय से पढ़ना आता है उस सजन ने पहले महाबीर जी के सिंहासन के आगे सीस झुकाकर तथा "धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चेपातशाह जी" दो बार बोल कर रामायण का राजतिलक प्रसंग सहित पढ़ना है। पढ़ने में एकरसता हो। बड़े प्रेम में आकर ध्यान स्थिर कर अफुर अवस्था में ठहरे रहना है। अनुभव यह करना है कि महाराज जी हृदय में विराज़मान है। ख्याल इसी अनुभव में ठहरा रहे।

इसी प्रकार फिर शास्त्र पढ़ना है। शब्द उच्चारण स्पष्ट और शुद्ध हों। शास्त्र की समाप्ति पर शास्त्र पढ़ने वाले सजन ने सरस्वती कंचन होवे.... बोलना है और साथ ही साथ रूमाले से प्रकाशित शास्त्र को ढक देना है।

हर महीने अंग्रेजी तारीख के पहले मंगलवार को शास्त्र पढ़ने से पहले निम्नलिखित दोनों कीर्तन बोलकर:

"किस तरह बताऊं दुनिया दी बात, किस तरह बताऊं दुनिया दी हालत.."
"वक्त दे मुताबिक ओ सजन सब कोई प्यार करता है....."

सावन की मीटिंग का और बुजुर्गों की सेवा का पर्चा पढ़कर सुनाना है।

भोग लगाना 11

योग्यता

(1) नामी हो (2) गाना पहने हुए हो (3) आद् से कंचन (4) मासिक धर्म से निवृत्त (5) निष्कामी हो तो ठीक है, नहीं तो उच्च वृत्ति वाला सजन।

युक्ति

प्रार्थना, चरण शरण करके हनुमान जी का संग कर, इष्ट का ध्यान करके ख्याल से उन्हें यह भोग लगाना है।

भोग लवावां महावीर रघुनाथ जी नूं, सीद प्रसाद दास नूं बक्षो, शान्ति अपने नाम दा, आप दे घर विचों, आप ही लवा रहे हो, आप ही खा रहे हों, मैं तूं, जगत तूं, आप ही आप हो।

अगर भोग लगाने वाले की वृत्ति चरणों तक पहुंचेगी तो ही प्रसाद को भोग लगेगा। भोग आंखें बंद कर के हाथ जोड़ कर सीधे बैठ के जब संगत "धर्म दा झण्डा" बोलना आरम्भ करे तो लगाना है।

भोग लगाने वाला सजन भोग लगवा कर जब तक जयकारा न बोले तब तक धर्म का झण्डा' बोलते रहना है।

अमृत व प्रशाद बाँटना 12

योग्यता

(1) नामी (2) समवृत्ति, शांतिप्रिय (3) सन्तोषी व धैर्यवान (4) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (5) स्वच्छ हो अन्दरूनी व बेहरूनी वृत्ति दोनों से व स्वस्थ हो (6) मधुरभाषी, विनयशील हो (7) प्रेमी, श्रद्धावान (8) प्रसन्नचित्त (9) सादगी प्रिय (10) ठहराव हो।

युक्ति

प्रशाद व अमृत बाँटने से पहले भोग लगे प्रशाद की दो टुकड़ियां अमृत में मसल कर डाल देनी है। इसी प्रकार प्रशाद पर थोड़ा अमृत डालना है। प्रशाद व अमृत सब सज़नों को एकरस देना है। खड़े सजनों को प्रशाद व अमृत नहीं देना बैठे सजनों को ही देना है। प्रशाद बांटते समय संगत में पूर्ण विश्राम होवे। प्रशाद और अमृत पीछे से बाँटना शुरू करना है ताकि खलबली न होवे। अमृत सजनों को हाथ में देना है, कटोरी में नहीं। बिछाई वाले सजन जो प्रशाद लावें केवल वही प्रशाद संगत को देना है बाकि का प्रशाद केवल मालिक के प्यारों को देना है। प्रशाद थोड़ा-थोड़ा एकरस देना है। बचा हुआ प्रशाद रख लेना है और उसमें से कुछ जहां इतवार का सत्संग होता है वहां जिन्होंने मंगलवार को प्रशाद नहीं लिया हो केवल उन्हीं स्त्री पुरुष सजनों को देना है।

प्रशाद उन्हीं सजनों को देना है जो सभा में आएं, जो सभा में न आएं, उनके लिए प्रशाद व अमृत घर नहीं भेजना। प्रशाद सत्संग की समाप्ति पर बाँटना है।

खजाने का रख-रखाव 13

योग्यता

(1) पाँच प्यारों में से तीन सजन (2) द्वारे की चाल को समझते हों (3) नामी सजन, गाना पहने हुए (4) निष्ठावान, धर्म परायण हों (5) ईमानदार (6) सच्चाई पर परिपक्व हों (7) सचेत, सजग व जागरूक।

युक्ति

मालिक के प्यारों की अमानत में खयानत नहीं होनी चाहिए। तीन नामी सजन जिन्हें खजाने की ड्यूटी मिली हुई हो उन में से एक सजन बड़ा सचेत व सावधान होकर थाली के आगे बैठे। थाली में पैसे ज्यादा हो जाए तो सजन थाली के पैसे गुत्थी में डालता जाए। समाप्ति के बाद खजाने वाले सजन खजाना गिन कर उसे कापी में नोट कर लें।

तीन ड्यूटी वाले सजनों में से एक के पास खजाने का हिसाब हो दूसरे के पास चाबी व तीसरे के पास पैसा हो। मालिक के प्यारों का पैसा बड़ी सावधानी से रखना है।

थाली के खजाने में से संगत के पैसे नहीं तुड़वाने क्योंकि कोई किसी भाव से माथा टेकता है कोई किसी भाव से। यह सावधानी बर्तना अति आवश्यक है।

इन सजनों ने संगत के सजनों से मासिक चंदा भी एकत्रित नियमानुसार करना है।

मालिक के प्यारों को प्रशाद बाँटना 14

योग्यता

(1) पाँच प्यारों में से दो सजन (2) निर्णायक क्षमता (3) नीतिवान हो (4) ईमानदार हो (5) धर्मनिष्ठ हो (6) समवृत्ति (7) सच्चाई पर परिपक्व।

युक्ति

मालिक के प्यारों की जांच पड़ताल करके बाँटना है। मुँह मुलाजा न हो। कोई चीज आवे सबको एक समान देनी है। आठों दिनों में कोई चीज आवे एक सजन को नहीं बल्कि कभी किसी को कभी किसी को देनी चाहिए। पहले चीज जिसको दे चुके हो तो फिर चीज उस को दो जिसको नहीं दी है पर जांच कर लो कि यह लेने के भी योग्य है या नहीं। चाहे बर्फी का टुकड़ा हो या फल किसी को ज्यादा या कम नहीं देना। बिन वसीलियों को देना चाहिए।

जोड़ों पर 15

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था में हो (2) ईमानदार, किसी का मुंह मुलाजा करने वाला न हो (3) कर्तव्यपरायणता (4) शुद्ध आचरण हो (5) नम्र भाव हो (6) दृष्टि कंचन हो (7) मधुरभाषी हो (8) धैर्यवान (9) स्वस्थ (10) स्वच्छ (11) अनुशासित।

युक्ति

कार्य करने से पहले प्रार्थना, चरण-शरण और सात बार 'साडा है सजन राम-राम है कुल जहान' करके इस सेवा के महत्व को समझते हुए पूरी निष्ठा से ड्यूटी आरम्भ करें। जोड़ों की ड्यूटी में कम से कम दो सजन होवें। एक सजन जोड़ा लेता जाए व लाईनों में नम्बर से रखता जाए और दूसरा सजन टोकन सजनों को देता जाए। टोकन के दो सैट हों। एक जोड़ों पर सजन रखता जाए और दूसरा संगत को देता जाए। इससे कार्यविधि में आसानी होगी। दोनों टोकनों के एक होने पर ही सजनों को जोड़े वापिस करें।

ड्यूटी करते समय मन में नाम-अक्षर चलता रहे। ध्यान जुड़ा रहे और बातचीत में जी-जी का व्यवहार हो। सजन ने ड्यूटी के दौरान शांत व विनम्र बने रहना है।

पानी पिलाना 16

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था में हो (2) ईमानदार, सजन भाव में परिपक्व (3) कर्तव्यपरायणता (4) शुद्ध आचरण वाला (5) नम्र भाव हो (6) दृष्टि कंचन हो (7) मधुरभाषी हो (8) धैर्यवान (9) स्वस्थ (10) स्वच्छ (11) अनुशासित (12) शांतिप्रिय।

युक्ति

कार्य करने से पहले चरण-शरण कर सात बार "साडा है सजन राम-राम है कुल जहान" मन में कर लें। अपनी सेवा के महत्त्व को समझते हुए उसे पूरी निष्ठा से निभाये।

पानी पिलाने वाले सजन को सफाई का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। अपनी शारीरिक सफाई एवं पानी पिलाते समय गिलास आदि की सफाई। ड्यूटी करते समय जी-जी का वर्त्त वर्ताव हो और मन में नाम अक्षर चलता रहे। शान्ति और ठहराव का स्वभाव बना रहे।

जब सत्संग में कीर्तन के समय सजन प्रेममय हों तो उस वक्त पानी नहीं पिलाना।

ध्यान रहे पानी में लाल दवाई का उचित मात्रा में इस्तेमाल करना है और पानी से भरे पात्र को सफेद मलमल के कपड़े से ढक कर रखना है ताकि कोई मिट्टी का धूल-कण या कीटाणु आदि पानी को अशुद्ध न कर सके।

बिजली-माईक प्रबंध 17

योग्यता

(1) बिजली कार्यों सम्बन्धी समस्त बातों की पूर्ण जानकारी व सूझबूझ हो और बिजली के उपकरणों का ज्ञान हो (2) सतर्क और जागरूक हो (3) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (4) समस्त कार्य सुचारु रूप से हो (5) समझदार (6) धैर्यवान, मधुरभाषी, विनम्र हो (7) नामी हो।

युक्ति

बिजली की ड्यूटी वाले सजन ने समय पर ही सारा बिजली लगाने का प्रबन्ध कर लेना है। यह सारा काम विश्राम के साथ करना है ताकि करंट न लगे इसी प्रकार तार के हर जोड़ पर या अन्य उचित स्थानों पर टेप ठीक ढंग से लगाना है ताकि किसी सजन को भी करंट से नुकसान न हो और न ही बिजली का करंट आने में कोई खराबी हो। इसी प्रकार लाऊडस्पीकर लगाने आदि का काम सुचारु रूप से करना आवश्यक होता है क्योंकि लाऊडस्पीकर के जरिए जितनी आवाज स्पष्टता से एकरस जाएगी उतना ही संगत को अच्छा समझ आएगा और उनका सत्संग में ध्यान जुड़ा रहेगा। याद रहे लाऊडस्पीकर का प्रबन्ध इस प्रकार करना है कि कीर्तन के दौरान एक सैकिण्ड के लिए भी उसमें रुकावट न आए। फिर कीर्तन की समाप्ति के बाद बिजली का सामान और लाऊडस्पीकर ठीक प्रकार से उतार कर यथास्थान संभाल कर रखना है ताकि किसी किस्म का नुकसान न हो और जरूरत पड़ने पर हर चीज आराम से मिल जाए। यह सारा कार्य करते हुए ड्यूटी वाले सजन ने मन में अपना नाम अक्षर चलाते रहना है। लाऊडस्पीकर और बिजली के सारे सामान की लिस्ट बनाकर रखनी है।

सवारी को वापिस ले जाना व बिछाई समेटना

18

योग्यता

बिछाई करने वाले सजन।

युक्ति

सवारी की वापसी उसी प्रेम व श्रद्धा भाव से होनी चाहिए जिससे भरपूर हो सजन सवारी उठाता है। सत्संग समाप्ति पर मन में सात बार 'साडा है सजन राम-राम है कुल जहान' बोलने के पश्चात् यह बोलते हुए

"कथा समाप्त होत है सुनो वीर हनुमान"

शास्त्र बंद कर के रूमाले में लपेट देने हैं **फिर**

"सजन ऋषि ऋष्विर, सजन तपी-तपीश्वर...."

बोलते हुए सवारी को वापिस उसी प्रकार धीरे-धीरे विश्राम में चलते हुए यथास्थान पहुंचाना है। फिर इसी प्रकार बिछाई को भी उसी प्रेम भाव से समेटना है रूमाले उलटे तय कर के रखने हैं। यथास्थान रखने से पूर्व उन्हें गिन कर पूरा करके रखना है।